प्रेम वाहिनी

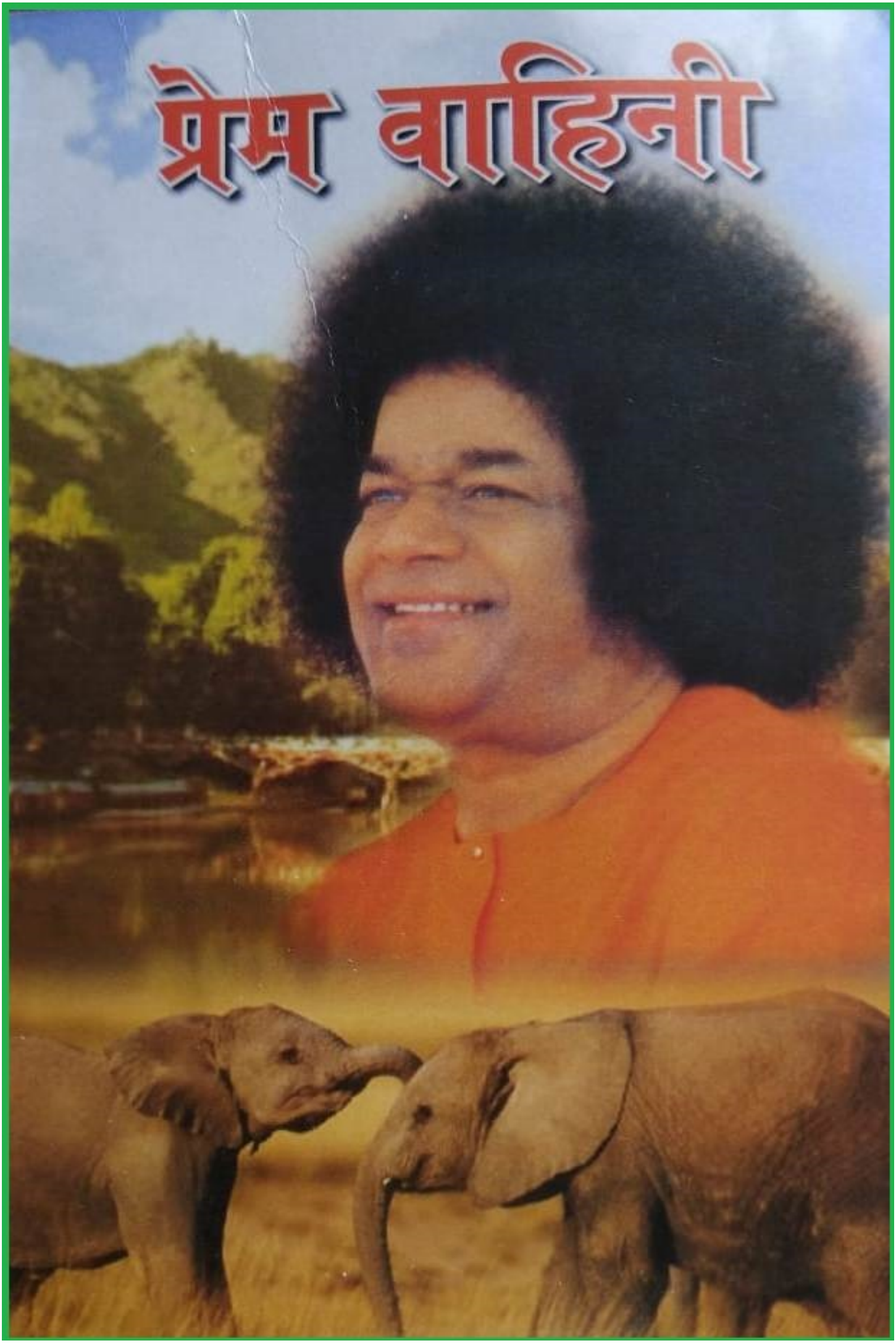

३

साधना-जीवन का एक ढंग

भूत, भविष्य और वर्तमान, तीनों कालों में ऐसे गुरु होते हैं जो व्यक्ति को एकाग्रनिष्ठा और लगन से व्यक्ति को अपने सर्वोच्च भौतिक, मानसिक और बौद्धिक विकास तक पहुंचाने वाली शिक्षा देते रहे हैं और उसे इन ऊंचाइयों का ज्ञान भी कराते रहते हैं। मनुष्य का मन तो भौतिक पदार्थों और उद्देश्यहीन निरीक्षणों और बाह्य जगत की आलोचना में रमता है। फिर इसे किस प्रकार लगन से कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

यह प्रश्न तो प्रत्येक को अपने से पूछना चाहिए "महात्मा और महापुरुष तो मेरे जैसे व्यक्ति ही होते हैं, वे भी शरीरधारी ही थे। यदि वे मोक्ष लाभ कर सके, तो मैं भी सफल हो सकता हूं यदि मैं भी उन्हीं चरण चिन्हों पर चलूँ। परछिद्रान्वेषण और उनकी त्रुटियाँ खोजने में जीवन बिता देने से मुझे क्या लाभ होवेगा?"

इसलिए साधना का प्रथम चरण, अपने अन्दर की त्रुटियों और दुर्बलताओं की खोज करना होता है; उन्हें दूर करने की और पूर्णत्व प्राप्त करने की चेष्टा करो।

प्रत्येक आने वाले दिन का अनवरत परिश्रम इसी लक्ष्य को लेकर किया जाना चाहिए कि पूर्णत्व लाभ करना है, जीवन के अन्तिम दिन मिठास और आनन्द से बिताने हैं। परन्तु स्मरण रहे कि प्रत्येक दिवस का सायंकाल भी होता ही है। यदि दिन शुभ कार्यों, पुण्य कार्यों में बीत जाता है तो रात्रि में गम्भीर सुखदायक, थकान दूर करने वाली, स्फूर्तिदायी वह निद्रा अवश्य प्राप्त होगी; जिसके विषय में कहा गया है कि सुषुप्ति समाधि की घनिष्ट सहेली होती है।

यहां पृथ्वी पर मानव जीवन की अवधि थोड़ी ही होती है। परन्तु इस लघु जीवन में ही, यदि मनुष्य बुद्धिमत्तापूर्वक सावधानी से समय का सदुपयोग

करे तो, दिव्य आनन्द को प्राप्त कर सकता है। दो मनुष्य, जो देखने सुनने में समान आकार और आकृति वाले हों, एक ही प्रकार की परिस्थितियों का जीवन बितावें, फिर भी उनमें से एक पवित्र जीवन जीकर देवदूत के समकक्ष हो जाता है; और दूसरा अपनी पाशविक प्रवृत्ति का अभ्यास कर नरपिशाच बन जाता है। इस विभिन्न विकास का कारण क्या है? आदतों और आचरण से मनुष्य एक स्थायी चरित्र का निर्माण कर लेता है और जीवन भर उसी के अनुसार व्यवहार करता है। इस प्रकार मानव अपने चरित्र का स्रष्टा और सृष्टि दोनों ही होता है।